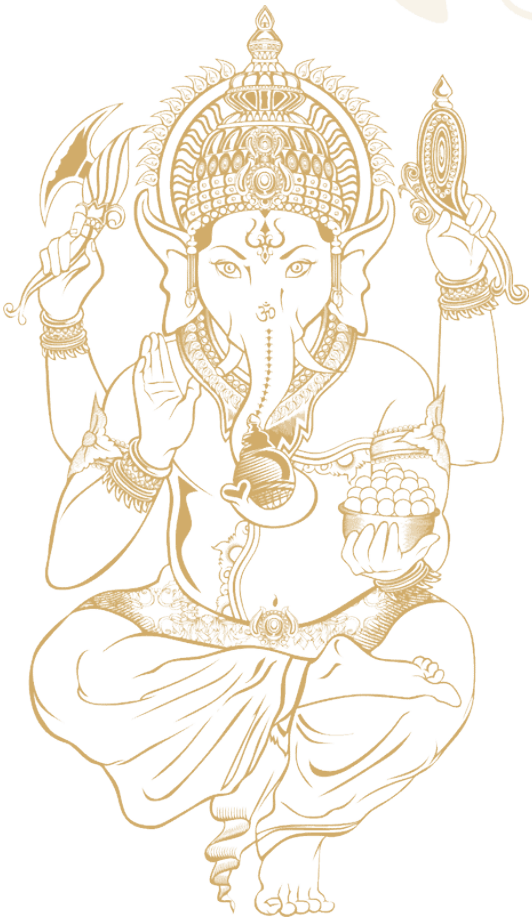

mr.akshay

Ms. Ravin

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119936901

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119936901 Date: 29/10/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
25-26/05/1996	जन्म तिथि	29/12/1995
शनि-रविवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 04:20:00	जन्म समय	18:29:00 घंटे
घटी 55:50:04	जन्म समय(घटी)	28:47:49 घटी
India	देश	India
Belgaum	स्थान	Nagpur
15:54:00 उत्तर	अक्षांश	21:10:00 उत्तर
74:36:00 पूर्व	रेखांश	79:12:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:31:36	स्थानिक संस्कार	-00:13:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:59:58	सूर्योदय	06:49:29
18:57:39	सूर्यास्त	17:40:36
23:48:28	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:11
मेष	लग्न	मिथुन
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	बुध
सिंह	राशि	मीन
सूर्य	राशि-स्वामी	गुरु
पू०फाल्गुनी	नक्षत्र	रेवती
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	बुध
1	चरण	2
हर्षण	योग	परिघ
बव	करण	बालव
मो-मोहन	जन्म नामाक्षर	दो-द्रोणी
मिथुन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
वनचर	वश्य	जलचर
मूषक	योनि	गज
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
मूषक	वर्ग	सर्प

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि		ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 17वर्ष 2मा 21दि		13:29:31	मेष		लग्न	मिथु	25:08:26	बुध 9वर्ष 8मा 20दि	
चन्द्र		11:10:35	वृष		सूर्य	धनु	13:31:51	शुक्र	
17/08/2019		15:10:57	सिंह		चंद्र	मीन	22:22:31	18/09/2012	
17/08/2029		23:24:29	मेष		मंगल	धनु	28:27:05	18/09/2032	
चन्द्र	16/06/2020	25:57:58	मेष	व	बुध	मक	02:16:42	शुक्र	18/01/2016
मंगल	16/01/2021	23:08:36	धनु	व	गुरु	धनु	05:07:01	सूर्य	18/01/2017
राहु	17/07/2022	03:50:24	मिथु	व	शुक्र	मक	15:47:27	चन्द्र	18/09/2018
गुरु	16/11/2023	11:15:39	मीन		शनि	कुंभ	25:25:52	मंगल	18/11/2019
शनि	17/06/2025	22:05:33	कन्या		राहु	कन्या	29:42:55	राहु	18/11/2022
बुध	16/11/2026	22:05:33	मीन		केतु	मीन	29:42:55	गुरु	19/07/2025
केतु	17/06/2027	10:39:23	मक	व	हर्ष	मक	05:24:34	शनि	18/09/2028
शुक्र	15/02/2029	03:45:39	मक	व	नेप	मक	00:47:07	बुध	20/07/2031
सूर्य	17/08/2029	07:50:26	वृश्चि	व	प्लूटो	वृश्चि	08:03:51	केतु	18/09/2032

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:48:28 चित्रपक्षीय अयनांश 23:48:11

लग्न-चलित

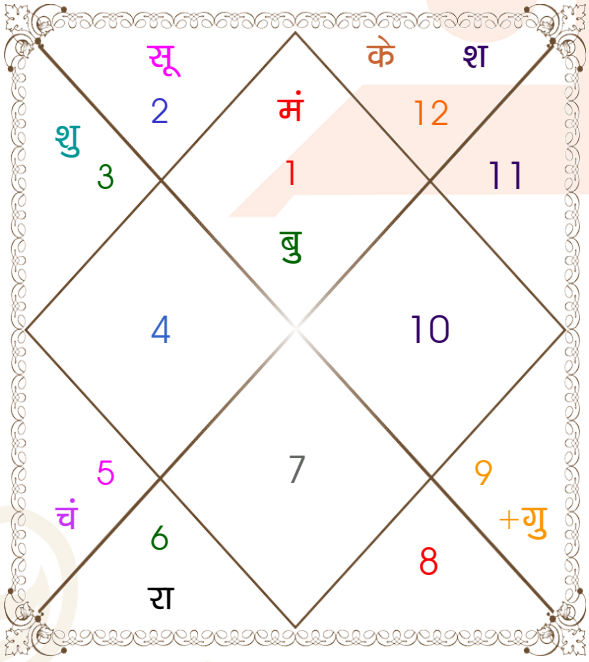

लग्न-चलित

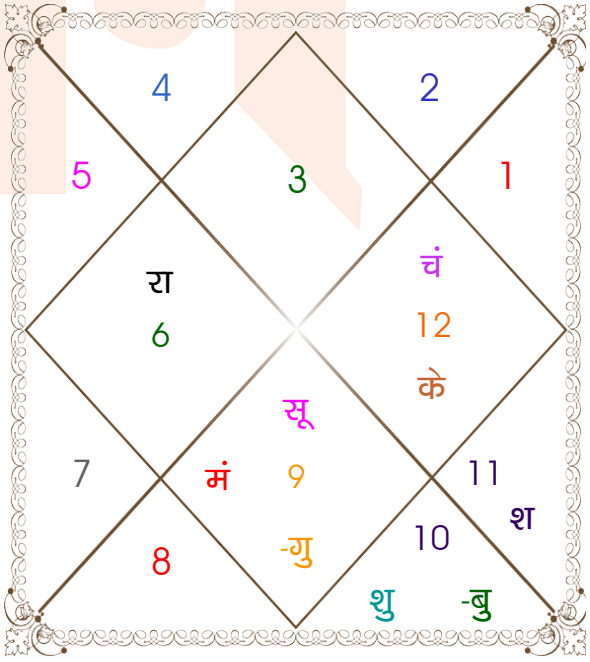

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मूषक	गज	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	मीन	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.50		

कुल : **23.5 / 36**

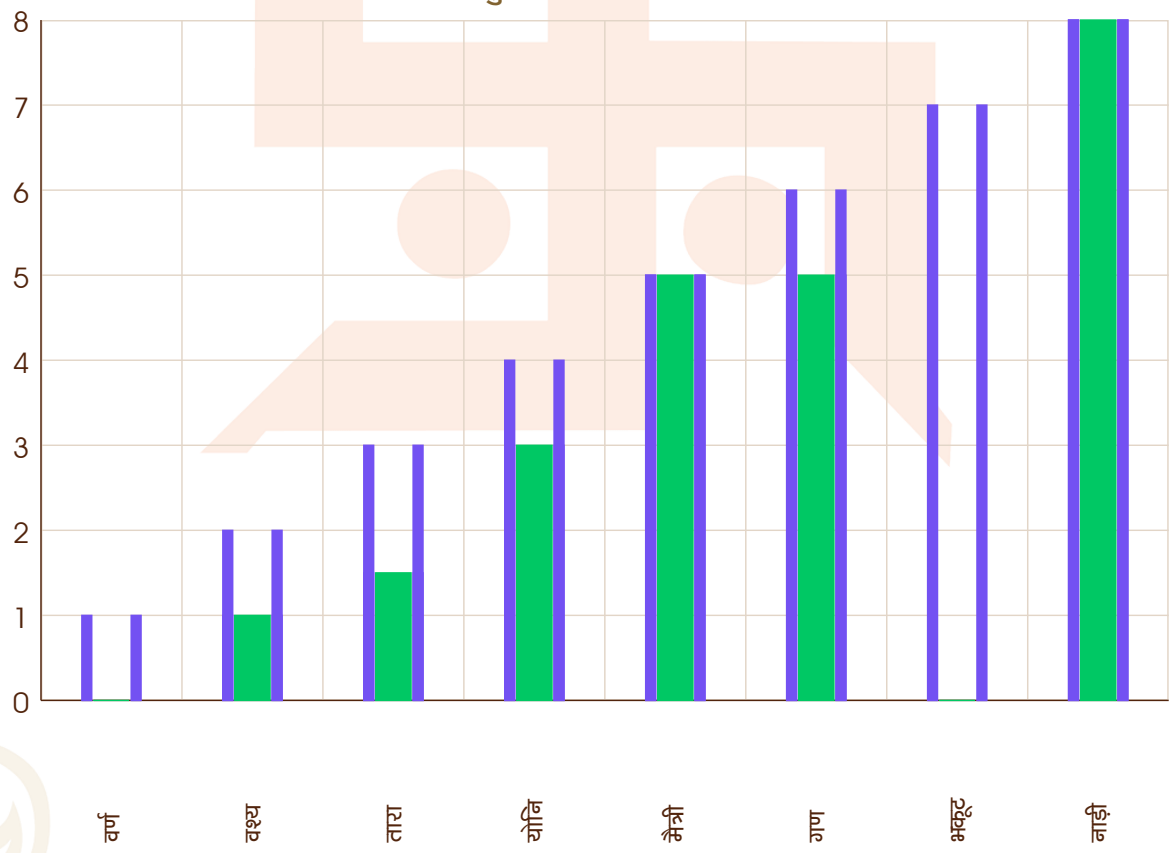

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

उतर्णील का वर्ग मूषक है तथा डेण ंअपद का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार उतर्णील और डेण ंअपद का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

उतर्णील मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है। क्योंकि मंगल उतर्णील कि कुण्डली में प्रथम भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्ध्;डडम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल उतर्णील कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण ंअपद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु डेण ंअपद कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें

भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु उतर्णील कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

उतर्णील तथा डेण ंअपद में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

उतर्णील का वर्ण क्षत्रिय तथा डेण ंअपद का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच सदैव अहं का टकराव होता रहेगा। साथ ही डेण ंअपद हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयं को अपने पति से हमेशा अधिक बुद्धिमान एवं चतुर समझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना उतर्णील एवं बच्चों के विकास में बाधक साबित हो सकती है।

वश्य

उतर्णील का वश्य वनचर है एवं डेण ंअपद का वश्य जलचर है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। दोनों एक-दूसरे के प्रति उदासीन रहेंगे तथा अपनी इच्छानुसार दोनों अपना जीवन निर्वाह करते रहेंगे। वनचर उतर्णील एवं जलचर डेण ंअपद के बीच वैवाहिक संबंध करने से उनका वैवाहिक जीवन औसत ही माना जायेगा अर्थात न ही अच्छा और न ही बुरा। यद्यपि कि दोनों एक-दूसरे का ख्याल नहीं रखेंगे फिर भी अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन भली-भांति करते रहेंगे। इनका जीवन सामान्यतः नीरस ही रहेगा क्योंकि प्रेम एवं रोमांस के तत्व इनके जीवन से अनुपस्थित ही रहने वाले हैं।

तारा

उतर्णील की तारा विपत तथा डेण ंअपद की तारा मित्र है। उतर्णील की तारा विपत होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। उतर्णील एवं उतर्णील के परिवार के लिए यह विवाह कष्टदायक हो सकता है तथा जिसके परिणामस्वरूप कष्ट, हानि एवं विपत्ति की संभावना बनी रहेगी। यद्यपि डेण ंअपद हमेशा अपने पति एवं परिवार के लिए सहयोगी एवं मददगार बनी रहेगी किंतु अपने पति के दुर्भाग्य का शिकार होकर डेण ंअपद को भी कष्ट झेलना पड़ सकता है। दुर्भाग्यवश बच्चे भी एवं विपन्नता का शिकार हो सकते हैं।

योनि

उतर्णील की योनि मूषक है तथा डेण ंअपद की योनि गज है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा

रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में उतर्णील एवं डेण ंअपद दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि उतर्णील एवं डेण ंअपद के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण उतर्णील एवं डेण ंअपद जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

उतर्णील का गण मनुष्य तथा डेण ंअपद का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में डेण ंअपद सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर उतर्णील व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण उतर्णील अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

उतर्णील से डेण ंअपद की राशि अष्टम भाव में स्थित है तथा डेण ंअपद से उतर्णील की राशि षष्ठम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। इस मिलान को भकूट मिलान में स्वीकृति नहीं प्रदान की जाती है तथा 0 अंक/गुण प्रदान किए जाते हैं। उतर्णील एवं डेण ंअपद दोनों आक्रामक, गुस्सैल एवं झगड़ालू स्वभव के होंगे। उतर्णील शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं, उनके अनेक शत्रु हो सकते हैं तथा अपने व्यवसाय में भी उन्हें जूझना पड़ सकता है। दूसरी ओर डेण ंअपद बिल्कुल लापरवाह, कोई भी कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी नहीं निभाने वाली, हरदम स्वयं के स्वार्थपूर्ति में ही खोई रहने वाली होंगी। उन्हें किसी भी प्रकार का वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हो पायेगा तथा उनके पति की मृत्यु की भी संभावना बनी रहेगी।

नाड़ी

उतर्णील की नाड़ी मध्य है तथा डेण ंअपद की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह जीवन के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण अवयवों का समन्वय है। अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ काया एवं अच्छे यौन जीवन के लिए वात, पित्त एवं कफ का शरीर में संतुलन

आवश्यक है। जिसके कारण उतर्णीेल एवं डेण त्ंअपद के बीच साहचर्य, सुख एवं समृद्धि की वृद्धि तथा उन्हें अच्छे, स्वस्थ एवं आज्ञाकारी संतान प्रदान होगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

उतर्णीेल की राशि अग्नितत्व युक्त सिंह तथा डेण ंअपद की राशि जलतत्व युक्त मीन है। अग्नि एवं जलतत्व में नैसर्गिक विषमता के कारण उतर्णीेल एवं डेण ंअपद की स्वाभाविक प्रवृतियों में अंतर रहेगा जिससे परस्पर संबधों में मधुरता के भाव में न्यूनता रहेगी। अतः मिलान विशेष अच्छा नहीं रहेगा।

उतर्णीेल की राशि का स्वामी सूर्य तथा डेण ंअपद की राशि का स्वामी बृहस्पति परस्पर मित्र राशि में स्थित हैं। अतः इसके प्रभाव से उतर्णीेल और डेण ंअपद के आपसी संबधों में प्रगाढ़ता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति आकर्षण, समर्पण एवं सहयोग के भाव की प्रबलता रहेगी। साथ ही एक सच्चे मित्र की तरह एक दूसरे की गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। इन प्रवृतियों के कारण उतर्णीेल और डेण ंअपद का वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

उतर्णीेल की राशि तथा डेण ंअपद की राशि परस्पर अष्टम एवं षष्ठ भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उतर्णीेल और डेण ंअपद के उपरोक्त शुभ प्रभावों में न्यूनता होगी तथा परस्पर अनावश्यक मतभेद, वैमनस्य तथा विरोध का भाव रहेगा। साथ ही एक दूसरे के गुणों की उपेक्षा करके वे कमियों पर विशेष ध्यान देंगे जिससे समय समय पर कलह होता रहेगा तथा परिवार में अशांति रहेगी। अतः उतर्णीेल और डेण ंअपद को ऐसी प्रवृतियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

उतर्णीेल का वश्य वनचर तथा डेण ंअपद का वश्य जलचर है। वनचर एवं जलचर में नैसर्गिक समानता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक अंतर भी समान रहेगा। साथ ही काम संबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

उतर्णीेल का वर्ण क्षत्रिय तथा डेण ंअपद का वर्ण ब्राह्मण है । अतः उतर्णीेल की प्रवृति साहसी एवं पराक्रमी कार्यो में रहेगी । डेण ंअपद शैक्षणिक क्षेत्र, शास्त्रीय या धार्मिक कार्यो के प्रति रूचिशील रहेंगी जिससे उतर्णीेल और डेण ंअपद के कार्य क्षेत्र में नित्य उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे ।

धन

उतर्णीेल और डेण ंअपद दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

उतर्णील की नाड़ी मध्य तथा डेण ंअपद की नाड़ी अन्त्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में जन्म होने के कारण नाड़ी दोष के प्रभाव से मुक्त रहेंगे अतः गंभीर शारीरिक कष्ट से सुरक्षित रहेंगे लेकिन मंगल का दोनों के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव नहीं रहेगा। इससे दोनों गुप्त या धातु संबंधी रोगों से परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही संभोग क्रिया में भी दोनों शिथिलता तथा उदासीनता प्रदर्शन का करेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन के सुख में अल्पता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त डेण ंअपद के गर्भपात की भी संभावना रहेगी। अतः उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता करने के लिए उतर्णील और डेण ंअपद दोनों को हनुमान की उपासना, मंगलवार के उपवास तथा मूंगा आदि धारण करना चाहिए। इससे अशुभ प्रभावों में न्यूनता तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से उतर्णील और डेण ंअपद का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त उतर्णील और डेण ंअपद के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में डेण ंअपद के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन डेण ंअपद को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में डेण ंअपद को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से उतर्णील और डेण ंअपद सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार उतर्णील और डेण ंअपद का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

डेण ंअपद तथा उसकी सास के परस्पर संबध अच्छे नहीं रहेंगे। आयु में अधिक अन्तर होने के कारण इनके गहन मतभेद रहेंगे। लेकिन अन्य कोई भी समस्या इतनी गंभीर नहीं

होगी जिनका कोई समाधान न हो। अतः यदि डेण ंअपद धैर्य एवं बुद्धिमता पूर्वक सामंजस्यशील प्रवृति का अनुसरण करें तो सास से संबधों में अनुकूलता आ सकती है। अतः अपनी ओर से उन्हें उनकी पूर्ण रूप से सेवा तथा सुख सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।

ससुर के साथ डेण ंअपद के संबध मधुर रहेंगे तथा अपने विनम्र व्यवहार सम्मान की भावना तथा सेवा की प्रवृति से उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में प्रसन्न रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से संबधों में प्रतिकूलता रहेगी तथा आपस में ईर्ष्या, प्रतिद्वन्दिता एवं आलोचना का भाव रहेगा।

इस प्रकार डेण ंअपद का ससुराल में समय सामान्य रूप से ही व्यतीत होगा तथा अन्य जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

ससुराल-श्री

उतर्णील तथा सास के संबधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यदि उतर्णील तथा इनकी सास आपसी सामंजस्य तथा बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों की मधुरता में वृद्धि हो सकती है।

लेकिन ससुर के साथ में उतर्णील के संबध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही उनसे पिता के समान ही व्यवहार करेंगे। साथ ही वे भी उतर्णील को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे। उतर्णील समय समय पर अपने ससुर से आवश्यक तथा बहुमूल्य सलाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु साले तथा सालियों के साथ में संबधों में तनाव तथा मतभेद रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आपस में स्नेह सहयोग तथा सहानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इस प्रकार सामान्य रूप से ससुरालवालों का दृष्टिकोण उतर्णील के प्रति अनुकूल ही रहेगा।